

क. सुसमाचार के लेखक:

❖ असफल प्रचारक।

- बाकी प्रचारकों की तरह, मरकुस अपना नाम लेकर उल्लेख नहीं करता है। वह एक लड़का था जब उसके द्वारा बताई गई घटनाएँ घटित हुईं, जिनके बारे में उसे संभवतः प्रेरित पतरस के साथ अपने घनिष्ठ संबंध के माध्यम से पता चला (1 पतरस 5:13)।
- यूहन्ना मरकुस की माँ यरूशलेम में उस स्थान की मालकिन थी जहाँ कलीसिया पतरस के कारावास के अवसर पर प्रार्थना करने के लिए एकत्रित हुई थी (प्रेरितों के काम 12:12)।
- इसके तुरंत बाद, बरनबास और शाऊल (जो दान लाने के लिए यरूशलेम गए थे) यूहन्ना मरकुस को अन्ताकिया ले गए (प्रेरितों के काम 12:25)।
- अन्ताकिया में, जब पवित्र आत्मा ने बरनबास और शाऊल को अन्यजातियों के बीच प्रचारक बनने के लिए बुलाया, तो वे यूहन्ना मरकुस को एक सहयोगी के रूप में अपने साथ ले गए। (प्रेरितों के काम 13:2-5)।
- लेकिन युवा मरकुस के लिए प्रचारक जीवन बहुत कठिन साबित हुआ, जिसने यरूशलेम लौटने का फैसला किया (प्रेरितों के काम 13:13)।

❖ सेवकाई के लिए उपयोगी।

- जब पौलुस ने दूसरी प्रचार यात्रा का प्रस्ताव रखा, तो उसने मरकुस को सहयोगी के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया (प्रेरितों के काम 15:36-38)। पौलुस को मजबूत मददगारों की जरूरत थी, जो बोझ नहीं, बल्कि सहारा बनें। मरकुस इस रूपरेखा में फिट नहीं बैठे।
- हालाँकि, बरनबास को यकीन था कि उसके भतीजे मरकुस में एक अच्छा प्रचारक बनने की पर्याप्त क्षमता है। इसलिए वह मरकुस को अपने साथ साइप्रस ले गया, जबकि पौलुस और सीलास एशिया की ओर चले गए (प्रेरितों के काम 15:39-41)।
- हम नहीं जानते कि आगे क्या हुआ, लेकिन हम जानते हैं कि बरनबास सही था। अपने पत्रों में उसके द्वारा किए गए तीन संदर्भों के माध्यम से, पौलुस ने मरकुस को "सेवकाई के लिए उपयोगी", एक प्रभावी सहयोगी माना (कुलुस्सियों 4:10; फिलेमोन 24; 2 तीमुथियुस 4:11)।
- इस दूसरे अवसर के लिए धन्यवाद, आज हम मरकुस के सुसमाचार की रोमांचक कहानी का आनंद ले सकते हैं।

ख. सुसमाचार का प्रारंभ:

❖ तैयारी। मरकुस 1:1-8.

- मरकुस हमें अपने बेटे की यात्रा की तैयारी कर रहे परमेश्वर से परिचित कराते हुए शुरू करता है (मरकुस 1:1-2; मलाकी 3:1)। एक यात्रा जो स्वर्गीय न्यायालयों में शुरू होती है, और जो यीशु मसीह को क्रूस पर ले जाएगी, स्वर्ग में फिर से चढ़ जाने के लिए (मरकुस 16:19)।
- इस तरह से तैयार करने के लिए, परमेश्वर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को चुनता है, "जंगल में एक पुकारनेवाले को" (मरकुस 1:3; यशायाह 40:3)।
- इससे पहले कि यीशु हमारे लिए अपना जीवन देने के लिए अपनी यात्रा शुरू करे, यूहन्ना ने लोगों को पश्चाताप करने का निर्देश देकर और उन्हें बपतिस्मा लेने के लिए आमंत्रित करके उनके दिलों को तैयार किया (मरकुस 1:4-6)।
- उसने उन्हें परमेश्वर के पुत्र को प्राप्त करने के लिए तैयार किया: स्वयं यूहन्ना से भी अधिक शक्तिशाली; अधिक योग्य; और वह अधिक प्रभावशाली बपतिस्मा देगा (मरकुस 1:7-8)।

❖ बपतिस्मा। मरकुस 1:9-13.

- यीशु ने अपनी यात्रा एक शानदार तरीके से शुरू की: पिता परमेश्वर उसे अपने पुत्र के रूप में प्रस्तुत करता है, और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में अपनी उपस्थिति प्रकट करता है (मरकुस 1:10-11)। शुरुआत से ही, यीशु को एक दिव्य व्यक्ति, परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। लेकिन उसे एक मानवीय व्यक्ति के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है:
 - (1) उसे यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा दिया गया, न कि इसके विपरीत (मरकुस 1:9)
 - (2) यह आत्मा द्वारा निर्देशित था (मरकुस 1:12)
 - (3) उसे परमेश्वर के साथ अकेले समय बिताने की आवश्यकता थी (मरकुस 1:13ए)
 - (4) उसकी शैतान द्वारा परीक्षा की गयी (मरकुस 1:13बी)
 - (5) उसने शारीरिक खतरों का सामना किया (मरकुस 1:13सी)
 - (6) स्वर्गदूत उसकी सेवा करते थे (मरकुस 1:13डी)

❖ संदेश। मरकुस 1:14-15.

- यीशु के प्रारंभिक संदेश में तीन पहलू शामिल थे (मरकुस 1:15):
 - (1) "समय पूरा हो गया है": 70 सप्ताह की भविष्यवाणी का एक संदर्भ (दानियेल 9:24)।
 - (2) "परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है": एक वादा कि उद्धार की वाचा पूरी होने लगी थी।
 - (3) "मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो": यीशु में विश्वास के माध्यम से क्षमा स्वीकार करके, वाचा में सक्रिय भाग लेना आह्वान।
- हमारे वर्तमान संदेश में भी ये तीन पहलू शामिल हैं: समय पूरा हो चुका है; यीशु आ रहा है; और हमें पश्चाताप और विश्वास करना चाहिए ताकि हम उसके साथ जा सकें।